ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

युग प्रवर्तक
ऋषिवर दयानन्द सरस्वती

देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्य्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाये हैं। इसको पढ़–पढ़ा सुन–सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं।

–सत्यार्थ प्रकाश

श्री कृष्ण योगेश्वर

गौ पालक थे यशोदा नन्द बाबा के लाल, बिना कृष्ण देवकी वासुदेव थे बेहाल।
विपदा में मित्र को गले लगाना थे जानते, सखा के दुःख मिटाना कर्त्तव्य थे मानते।
सुदामा श्याम–प्रेम से हो गया निहाल, जीवन में आ पायेगा न कभी अकाल।
युधिष्ठिर यज्ञ में अग्र पूज्य थे कृष्ण, वेद, विज्ञान ज्ञाता उन्हें कहते थे भीष्म।
वेद पालक योद्धा था बंसी का बजैय्या, कौन कहता है था चोर कन्हैय्या ?
धर्म रक्षक, पाप भक्षक था सुदर्शनधारी, दुर्योधन की नीतियों का था विरोधी मुरारी।
योगीराज ने धर्म पताका थी फहराई, संग गवालों के मधुवन में गायें चराई।
नायक महाभारत का था कन्हैय्या, था लोक रक्षक गीता का रचैय्या।

–कृष्ण चन्द्र आर्य

यह अंक नंदा परिवार, धनेटा, जिला हमीरपुर द्वारा स्व. श्रीमती ईश्वरी देवी एवं स्व. श्री मथरा दास नन्दा को समर्पित किया गया तथा आगामी अंक डी.ए.वी. स्कूल, हमीरपुर के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ८५वां विक्रमी सम्वत् २०७१ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११५ सितम्बर २०१४

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज खरीहड़ी का
२०वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग खरीहड़ी, सुन्दरनगर का २० वां का वार्षिक उत्सव १८ सितम्बर से २० सितम्बर, २०१४ तक धूमधाम, हर्षोल्लास एवं श्रद्धाभाव से गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी मनाया जा रहा है इस अवसर पर महर्षि दयानन्द मठ घण्डरां के भगवां वस्त्र धारी स्वामी सन्तोषानन्द जी महाराज एवं हिमाचल प्रदेश आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनीक श्री वीरी सिंह जी अपने भजनों एवं उपदेशों की अमृत वर्षा करेंगे।

इस अवसर पर स्थानीय विद्वान् भी अपने विचारों की अमृतवर्षा करेंगे। अतः आप सभी से विनम्र निवेदन है कि उपरोक्त स्थान और समय पर पहुँच कर उत्सव की शोभा बढ़ाऐं।

कार्यक्रम

दिनांक १८ से १६ सितम्बर २०१४

हवन..... प्रातः ७.३० से ८.३० बजे तक

प्रातः ८.३० से ६.३० बजे तक एवम् रात्रि ७.३० से ६.३० भजन एवं प्रवचन।

दिनांक २० सितम्बर २०१४

हवन ..... प्रातः ८.०० बजे से ६.०० बजे तक

भजन एवं प्रवचन .....प्रातः ६.०० बजे से १०.४० बजे तक

नोट : कार्यक्रम के तुरन्त पश्चात हि. प्र. पैंशनर कल्याण संघ मण्डी की कार्यकारिणी की बैठक ठीक ११.०० बजे प्रारम्भ होगी। बैठक के समापन के पश्चात प्रीति भोज का अयोजन होगा।

निवेदक : प्रधान एवं समस्त कार्यकारिणी

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग खरीहड़ी, सुन्दरनगर (हि.प्र.)

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मोबाइल : 94180-12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, संरक्षक, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180-71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, संरक्षक एवं विशेष सलाहकार, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 090348-17118, 094669-55433, 01733-220260
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184-60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591-05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180-20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182-79900
मुख्य प्रबन्ध-सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181-54988
प्रबन्ध-सम्पादक	: 1. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मोबाइल : 98161-25501 2. माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184-71530
सह-सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

भारत उन्नति के शिखर पर तक तक रहा जब तक इस देश में महिलाएं शिक्षित थीं और उनका सभी आदर–मान करते थे। कालांतर में समाज में कुछ ऐसे परिवर्तन हुए कि स्वार्थी, दम्भी और छली व्यक्तियों ने स्त्री को पैर की जूती कह ड़ाला। कुछ पौराणिक विद्वानों ने तो स्त्री और शुद्र को वेदों की ऋचाएं पढ़ने से स्पष्ट इन्कार करते हुए कहा है कि स्त्री और शुद्र वेद मन्त्रों को मत बोलें अन्यथा उनके कानों में पिघलता हुआ शीशा ड़ाल दिया जाए। यह कितना क्रूर अन्याय है। देश की जननी को पैर की जूती कहना और शूद्रों को भी वेद पढ़ने से वंचित करना उनके साथ घोर अन्याय है। इस देश के बहूमुखी विकास के पीछे नारी वर्ग का शिक्षित होना और कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था पर विश्वास मानना था। लेकिन सरकते–सरकते आधुनिक युग तक महिलाओं और शूद्रों को अनेक समस्याओं से दो–दो हाथ करने पड़े। भक्तिकालीन युग में तुलसीदास जी ने, "ढ़ोल, गंवार, शुद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी" तक कह ड़ाला। संत कवि और महान् सुधारक कबीर दास ने तो यह भी कह दिया,

"नारी की झाईं पड़त अन्धा होत भुजंग,
कबीरा उनकी का गति जो नित नारी के संग।

अंत में इस कवि ने यहां तक कह ड़ाला :

नारी तो हम भी करि, जाना नहीं विचार,
जब मिली तब परि हरि, नारी महा विकार।

रीतिकालीन कवियों द्वारा नारी का श्रृंगारिक वर्णन किया गया है। आधुनिक युग में कवियों ने नारी जाति का स्टीक और मार्मिक वर्णन किया है। एक कवि महोदय नारी को संबोधित करते हुए कहते हैं "नारी तुम केवल श्रद्धा हो।" उसने नारी को संबोधित करते हुए आगे कहा कि : पीयूष स्त्रोत से वहा करो, जीवन के समतल ह्रदय तल में। आधुनिक युग के लगभग समस्त कवियों एवं साहित्यकारों ने नारी का मार्मिक वर्णन किया है। सुप्रसिद्ध समाज सुधारक एवं स्वतन्त्रता संग्राम के नायक ऋषिवर दयानन्द ने मनु स्मृति का उदाहरण उधृत करते हुए कहा : 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ स्त्री जाति का आदर मान होता है वहाँ देवताओं की स्वर लहरियाँ सुनाई देती हैं। ऋषिवर देव दयानन्द ने तो नारी जाति को पुरूष जाति से भी ऊंचा स्थान दिया है। वेद शास्त्रों के द्वार सभी वर्ग, समुदाय और जातियों के लिए खोल दिए हैं। महिलाओं के पठन–पाठन हेतु तो ऋषिवर देव दयानन्द ने कन्या गुरूकुलों की स्थापना की। इन गुरूकुलों से निकली हुई कन्याओं ने अपनी विद्वता का ड़ंका चारों ओर बजा कर यह सिद्ध कर दिया कि नारिएं पैरों की जूती नहीं अपितु सिर का मुकुट है। मानव का सर्वांगीण विकास नारी जाति के उत्थान पर निर्भर करता है। इसलिए तो एक आधुनिक कवि द्वारा अत्यंत रोषपूर्ण ढंग से नारी समाज को मुक्त करने की बात करते हुए कहा :

मुक्त करो नारी को मानव, चीर वन्दनी नारी को
युग–युग की बर्बर कारा से उस जननी, सखी प्यारी को।

यह ऋषिवर दयानन्द की शिक्षाओं का प्रभाव था कि आज समाज के हर क्षेत्र में नारी पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर उत्थान की ओर अग्रसर है। इसी प्रकार वर्ण व्यवस्था को कर्म के अनुसार मानना ही आर्य जगत् के महान् सन्यासी ऋषिवर दयानन्द ने जीवन में सर्वांगीण विकास का मूल मन्त्र माना। उन्होंने कहा की कर्मों के अनुसार ही व्यक्ति उच्चता के आसन का वरण करता है। ऋषिवर देव दयानन्द ने परोपकार और मानव सेवा को ही सबसे उच्च धर्म, कर्म और जीवन का मर्म माना। उन्होंने कहा कि इस देश में पुनः राम राज्य लाने के लिए महिलाओं और शूद्रों को सिर का मुकुट माना जाना चाहिए। तभी और केवल तभी इस देश में पुनः महात्मा गांधी के सपनों का राम–राज्य लाने का सपना साकार हो सकता है। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय और शूद्रों को कर्मानुसार ही मनुस्मृति में मनु महाराज ने कार्य करने का आदेश दिया है। श्रेष्ठ कर्म को करने वाला शुद्र भी कर्मानुसार ब्राह्मण, वैश्य या क्षत्रिय हो सकता है। उपरोक्त तीनों वर्णों से कोई व्यक्ति भी कर्मानुसार शुद्र बन सकता है। ऋषिवर दयानन्द ने स्पष्ट कहा कि यदि वर्ण व्यवस्था जन्मानुसार ही मानी जाती तो ईश्वर ने सभी वर्णों में अंतर स्पष्ट किया होता। उदाहरणार्थ वह प्रभु ब्राह्मण की हड्डिऐं सोने की, क्षत्रिय की चांदी की तथा वैश्य की पीतल आदि धातु की बनाता। लेकिन उस प्यारे प्रियतम ने सभी का शरीर एक जैसा बनाया है और जीवन में बहुमुखी विकास करने हेतु सुन्दर मस्तिष्क प्रदान किया है।

आज के युग में एकता के सूत्र में बंधकर मानव को विश्व के कल्याण और उत्थान में काम करना चाहिए और नेकी और सुकर्मों के बीजों को बोते रहना चाहिए ताकि हम सब मिल बैठकर उसके सुस्वादु फलों का रसपान कर सकें। हमारा प्रत्येक दिन, सुदिन तथा यश और गौरव से भरपूर होना चाहिए। हम सब भ्रातृभाव की जड़ों को मिल बैठकर मजूबत करें। वेद के अनुसार हम साथ चलें और साथ काम करें, और हम सभी के मन और वचन एक हों। मन, वचन और कर्म से हम किसी के अहित और अशुभ की कामना न करें। ऋषि मुनियों का सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया की विचारधारा हमें सदा और सर्वदा सुख और शांति की प्रेरणा देती रहे और हमारा जीवन शुभ और कल्याणकारी बना रहे। –कृष्ण चन्द आर्य

''गरीबों के मसीहा लाला मथरा दास''

लाला मथरा दास नन्दा का जन्म २० सितम्बर सन् १९०६ में धनेटा के एक साधारण परिवार में हुआ था। छः वर्ष की अल्पायु में ही आपकी माता श्रीमती वन्ती देवी का देहान्त हो जाने के कारण आपका पालन पोषण आपके ननिहाल नादौन में हुआ। अभी आप १२ वर्ष के ही थे कि आपके पिता श्री सीता राम नन्दा सख्त बीमार पड़ गये, आपने उनकी अत्यधिक सेवा की। इस बाल्य अवस्था में जब आप अपने बीमार पिता के मुंह से रुका हुआ कफ जिसे वे थूकने में असमर्थ थे हाथ से निकल रहे थे तथा शौच आदि से गन्दे बिस्तर साफ कर रहे थे तो इस दृश्य को देखने वाले पं. गौरी शंकर ने पूछा कि यह बालक कौन है ? यह बालक बड़ा होकर बहुत होनहार होगा। अपने पिता की बिगड़ती स्थिति को भांपते हुये आप ने उनसे कहा कि आप तो चल पड़े हमारा क्या होगा माताजी तो पहले ही चले गये हैं। हमारे पास न तो टका है–न वट्टा, हमारी शादियाँ भी कैसे होंगी। (उल्लेखनीय) है कि उन दिनों लड़के की शादी पर या तो पैसे देने पड़ते थे जिसे 'टका' कहते थे या बदले में अपनी बहन आदि की शादी उस परिवार में करनी पड़ती थी जिसे 'वट्टा' कहते थे इस पर उनके पिता जी ने श्री कृष्ण के चित्र की तरफ देखकर कहा कि बंशीवाला सब ठीक करेगा। सभी की शादीयाँ पुण्य में अर्थात् बिना किसी टके या वट्टे के होंगी सभी लाखों में होंगे। यह कहते हुए उनका देहावसान हो गया। कालांतर में यह बात सही साबित हुई।

क्योंकि लाला मथरा दास नन्दा परिवार में सबसे बड़े थे अपनी जिम्मेदारी समझते हुए उन्होंने अपनी पढ़ाई को छोड़कर अपने भाईयों को यथा संभव पढ़ाया तथा अपने पैरों पर खड़ा करने का भरसक प्रयास किया।

<u>स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान</u> : अभी २३ वर्ष के ही थे कि आप आर्य समाजी उपदेशकों व कांग्रेस के महात्मा गान्धी, पंडित नेहरु, सरदार पटेल, लाला लाजपत राय आदि महान् नेताओं से इतने प्रभावित हुए कि स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। घर छोड़ दिया। जहाँ भी स्वतन्त्रता संग्राम का आन्दोलन होता पहुँच जाते अपने ओजस्वी भाषण से लोगों के दिमाग के बन्द ताले खोल देते थे। १३ मई सन् १९३० में गोहाना (हरियाणा) में एक विशाल जनसभा जिसमें हजारों लोग उपस्थित थे जब वे अपना ओजस्वी भाषण दे रहे थे तो अंग्रेजों के जुल्म के जो दृष्टान्त तथा हाऊस आफ कामनस की जो घटनायें सुनाई उससे अंग्रेज अफसर भी दंग रह गये। आपका भाषण इतना जोशीला व मार्मिक था कि सारे दर्शक क्रांतिकारी बनने के मूड में आ रहे थे। तालियाँ की गड़गड़ाहट से भयभीत होकर वहाँ पर उपस्थित अंग्रेज़ अफसर ने आपको भाषण देते हुये ही गिरफ्तार करने के आदेश दे दिये। लेकिन इस आज़ादी के परवाने ने इसका विरोध किया और कहा "कि जब तक मेरा भाषण खत्म नहीं होता तुम मुझे गिरफ्तार नहीं कर सकते, मैं कहीं भाग रहा हूँ" इस बात का दर्शकों ने पुरजोर समर्थन किया। तनाव को देखते हुये अंग्रेज़ आफिसर ने भाषण खत्म होने तक गिरफ्तारी को टाल दिया। भाषण खत्म हुआ तो लोगों ने फूलों के हारों से लाद दिया। वे कहा करते थे कि "वे क्षण मेरे जीवन के बेहतरीन क्षण थे।" उसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उनके भाषण से प्रभावित होकर अंग्रेज अफसर ने उनकी पढ़ाई के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि एक गुलाम देश के गुलाम व्यक्ति की क्या तालीम हो सकती है ? फिर उन्हें एक खतरनाक क्रांतिकारी घोषित करके हाथों में हथकड़ियाँ व पांव में बेड़ियाँ पहना कर १५ किलोमीटर पैदल ले जाया गया फिर पुलिस रिमाण्ड में रखा गया। १७ मई १९३० को उनके विरूद्ध अदालत में विभिन्न धाराओं के तहत चालान पेश किया गया।

श्री मुहम्मद फिदा उल्लाह, एस. डी. सी. सिविल सोनीपत ने २० जून, १९३० को छः माह की कठोर कैद की सजा सुनाई, तदनुसार आपने २० जून, १९३० से १० अक्तूबर, १९३० तक जिला जेल रोहतक में तथा ११ अक्तूबर, १९३० से २९ नवम्बर, १९३० तक केन्द्रीय जेल अम्बाला में सजा भुगती। जेल में आपके साथी पं. श्री राम शर्मा जी थे। जो बाद में पंजाब सरकार में मन्त्री व विधानसभा में विपक्ष के नेता भी रहे। जेल में भी हड़ताल करवाने का आपको श्रेय जाता है। जेल से रिहा होने के बाद आप फिर कराची, रंगून, बर्मा, कलकत्ता, कोचीन आदि स्थानों में भी घूमे। रोटी रोजी की तलाश के साथ–साथ स्वतन्त्रता संग्राम का सन्देश जगह–जगह देते रहे। आपके अनुज श्री राम कृष्ण नन्दा भी आपसे प्रेरित होकर स्वतन्त्रता संग्राम में कूदे तथा उन्होंने भी जेल में सजा भुगती, बाद में स्वतन्त्रता सेनानी कहलाये।

<u>समाज सुधार में योगदान</u> : इसके बाद आपने घर परिवार की सुध ली तथा अपनी व अपने भाइयों की शादियाँ की, कारोबार जमाया लेकिन चूंकि आपके ऊपर इस दौरान महर्षि दयानन्द जी का जादू सिर चढ़ कर बोल रहा था। आपने गृहस्थी के साथ–साथ समाज सुधार व वेद प्रचार का बीड़ा भी उठा लिया। सर्वप्रथम आपने एक ऐसी प्रथा का अन्त किया जिसके कारण आम आदमी का कचूमर निकल जाता था। उन दिनों लड़के की शादी के अवसर पर गांव

वासियों को जब खाना खिलाया जाता था तो सात डूने शक्कर व घी से भरकर साथ दिये जाते थे जोकि अतिकष्ट दायक था। आपने अपने अनुज श्री ज्ञान चन्द नन्दा की शादी पर इस रिवाज को खत्म कर दिया, थोड़ा विरोध अवश्य हुआ लेकिन प्रथा हमेशा के लिये बन्द हो गई।

दूसरे उन दिनों बारात तीसरे या पांचवे दिन वापिस जाती थी लोग तंग होते थे लेकिन मजूबर थे। धनेटा के लाला श्री राम जी के घर बारात आई वर पक्ष को काफी मनाया कि दूसरे दिन बारात वापिस कर देंगे वे नहीं माने। गरीबी का वास्ता दिया लेकिन कोई असर नहीं हुआ आनन फानन तीसरे दिन का खाना तैयार करना पड़ा। इसके बाद इन्होंने अपनी लड़की की शादी उसी पक्ष के परिवार में की तथा बारात दूसरे दिन विदा करने की शर्त लगाई जिसे पूरा करके दिखाया भी। इस तरह तीसरे व पांचवें दिन की बारात वापसी का रिवाज भी खत्म हुआ। कालान्तर में बारात को दूसरे दिन सुबह जल्दी भेजने का रिवाज भी आपने शुरू कराया।

छुआछूत मिटाना : आपके घर कर्मदीन गुजर नौकर रहता था वह मुसलमान होने के बावजूद कुएँ से पानी भर सकता था, लेकिन लाला थोला शाह का नौकर मंगत राम जो जाति का जुलाहा था हिन्दू होने के बावजूद भी उस कुएँ से पानी नहीं भर सकता था। आप कुएँ में पानी भरने जाते तो उस समय मँगतू राम भी आ जाता था तथा उसका पानी भी आप को ही भरना पड़ता था। एक दिन आपने मँगत राम को जबरदस्ती कुएँ पर चढ़ा दिया तथा उससे बलात पानी भराया तथा कहा कि शराफत की भी हद होती है। मुसलमान पानी भर सकता है हिन्दू नहीं ? सारे गाँव में बात फैल गई कि आपने मँगतू जुलाहे को कुएँ पर चढ़ा कर उससे पानी भरवाया। रात्रि को गांव वासियों की सभा हुई जिसमें आपको बुलाया गया। आपने अपना पक्ष रखा कि मँगतू भी हमारी तरह इन्सान है, क्या उसके कुएँ पर चढ़ने से पानी का रंग बदल गया ? पानी दूषित हो गया ? लेकिन एक न मानी गई तथा आपका हुक्का पानी बन्द कर दिया गया अर्थात् बिरादरी से बाहर निकाल दिया गया। लेकिन आपने हार नहीं मानी तथा छुआछूत की इस प्रथा को गांव से हटाने का प्रयास किया तथा कालान्तर में सफलता भी मिली।

इसी तरह उन दिनों हरिजन जूते गेट के बाहर खोल कर प्रायः घरों में आते थे तथा आदतन भूमि पर बैठते थे लेकिन उन्होंने इस प्रथा को भी हटाया तथा हरिजनों को भी अपने साथ कुर्सी या सोफे पर बिठाया करते, अगर कोई आनाकानी करता तो उसे घर से बाहर जाने को कहते थे, कि सभी इन्सान बराबर हैं यहाँ तक कि आपने भोज पर हरिजनों को भी एक ही पंक्ति में बैठा कर खाना खिलाया, इस बात पर कुछ विरोध तो हुआ लेकिन वे नहीं झूके।

पंचायती राज : इसी दौरान आप पंचायती राज संस्था से जुड़ गये। १६ वर्ष तक पंच–सरपंच रहकर आपने धनेटा क्षेत्र के विकास में कई आयाम जोड़े। "काम भी अपना ग़ांव भी अपना"या "विकास में जन सहयोग" योजनायें हिमाचल प्रदेश में अब लागू हुई लेकिन आपने सन् १६५२ में ही विभिन्न योजनायें सरकार एवं लोगों के सहयोग से धनेटा में बनवाई जिनमें मुख्य रूप से धनेटा में ३ कि.मी. लम्बी पीने के पानी की पाईप लाईन बिछवाई तथा तीन दशकों तक इस प्राईवेट वाटर सप्लाई स्कीम का रख रखाव भी करवाया। जिस समय इस स्कीम के सर्वेक्षण के लिये जिला बोर्ड धर्मशाला के ज़िला इन्जीनियर सन् १६५२ में आये तो एक ऐसा हादसा हुआ जिसने सबके रोंगटे खड़े कर दिये। हुआ यूँ कि जिस दिन सर्वेक्षण के लिये अधिकारी आये उसी दिन आपका लड़का सख्त बीमार पड़ गया आपकी धर्मपत्नी आपको रोकती रही कि आज घर से बाहर मत जाओ, बेटा बीमार है किसी अच्छे वैद्य को दिखा लेते हैं। लेकिन आप नहीं माने कहा कि मेरी पुरजोर कोशिश से ये सर्वेक्षण टीम आई है अगर मैंने आज साथ जाकर स्थल निरीक्षण नहीं करवाया तो हो सकता है कि यह योजना सिरे न चढ़े। फिर हमें सारी उम्र पानी सिर पर ढोकर ही लाना पड़ेगा अतः आप सर्वेक्षण टीम के साथ चले गये। सर्वेक्षण हो गया योजना सिरे चढ़ गई लेकिन जब आप वापिस घर आये तो पता चला कि बेटा भगवान को प्यारा हो गया। इसके आलावा भी आपने सड़क, पुल, स्कूल, चिकित्सालय, जंजघर आदि के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाई।

जब तक आप सरपंच रहे शायद ही कोई ऐसा मुकदमा हो जिसे अपने स्तर पर ही न निपटाया हो। दो एक मुकदमों में आप द्वारा दिये गये सहयोग के लिये पंजाब पुलिस ने आपको पुरस्कृत भी किया।

पक्के आर्यसमाजी : आप आर्य समाज के सिद्धांतों व महर्षि दयानन्द की मान्यताओं से इतने प्रभावित थे कि आपने आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिये अपना पूरा जीवन लगा दिया। आर्य समाज की अधिकांश संस्थाओं को आप नियमित रूप से सहायता राशि भेजा करते थे। आप आर्य समाज धनेटा के आजीवन संचालक रहे। आपने धनेटा में अपने बलबूते पर ४० बार वेद प्रचार कराया तथा दूर–दूर से विद्वत जनों को बुलाते रहे। आपका कहना था कि ऋषि ऋण से उऋण होने के लिये वेद प्रचार का आयोजन करना सबसे आसान माध्यम है। उपदेशक वर्ग आपकी सेवा परायणता, वेद प्रचार के प्रति लग्न को देख हमेशा प्रसन्नचित व उत्साहित होकर जाते थे। आप उपदेशकों को कहा करते थे

कि अपना कार्यक्रम सही समय पर शुरू कर दिया करें भले दो ही श्रोता क्यों हों ?

अतिथि यज्ञ : एक बार आर्य उपदेशक घर प्रचारार्थ अचानक आ गये। दो दिन के बाद घर में खाने पीने का सामान खत्म हो गया। अत्यन्त गरीबी में धन भी नहीं था बाजार में किसी ने उधार भी नहीं दिया। आप परेशान बैठे थे कि आज उपदेशकों को क्या खिलायेंगे इतने में धर्मपत्नी ने कहा कि आप उदास क्यों हैं ? भगवान परीक्षा ले रहा है, घबराओ मत, उन्होंने अपना कंगन दिया तथा कहा कि इसे बेचकर बाजार से सामान ले आओ। इस तरह किया उन्होंने अतिथि यज्ञ। उपदेशकों को आभास भी नहीं होने दिया कि खाने का प्रबन्ध यूं हुआ।

आप सच्चे ईश्वर भक्त थे, साप्ताहिक यज्ञ किया करते थे तथा सुबह शाम गायत्री जप, प्राणायाम किया करते थे। आपने सिर्फ उर्दु पढ़ा था लेकिन आर्य समाज के प्रभाव में आने के बाद आपने जैसे तैसे हिन्दी सीखी, आर्य ग्रन्थों का स्वाध्याय किया और चारों वेदों का भाष्य पढ़ा।

गरीबों के मसीहा : आप गरीबों के हमेशा मददगार रहे इलाके के लोग आपको गरीबों के मसीहा कहते थे। स्वतन्त्रता सेनानी होने के नाते आपको श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने ताम्र पत्र भेंट किया तथा मासिक पैंशन भी लगाई। आप इस मासिक पैंशन को निजि रूप में उपयोग नहीं लाते थे इस धन राशि को गरीबों के उत्थान में, सामाजिक कार्यों पर खर्च कर देते थे। आपने दस एक अनाथ कन्याओं व गरीब विधवाओं को मासिक पैंशन लगाई हुई थी गरीब कन्याओं की शादी पर हर संभव सहायता करने को तत्पर रहते थे। गरीबों, दुखियों के प्रति आपके मन में बहुत आदर था उनकी हर संभव सहायता करना आप अपना धर्म समझते थे। गरीब के प्रति अन्याय करना पाप समझते थे, कहा करते थे "मत रूला गरीब को वह रो देगा, यदि उसका मालिक सुन लेगा तो तेरी हस्ती जहाँ से मिटा देगा।" गरीबों के अपने समाज में मान सम्मान का भी पूरा ख्याल रखते थे। भदरू निवासी पं. अतर चन्द बताते हैं कि एक बार लाला जी मेरे घर पैसे वसूलने के लिये आये, लेकिन मेरे घर रिश्तेदारों को बैठा देखकर अभिवादन करके चुपचाप चल पड़े। मैंने बैठने को कहा तो उन्होंने कहा कि पं. जी मैं कहीं दूसरी जगह जरूरी काम से जा रहा हूँ तथा वे चले गये। दूसरे दिन मैंने दुकान में जाकर कहा कि लाला जी कल आपने मेरी इज्ज़त रख ली। जब आप कल आये तो मैंने सोचा कि कहीं आप रिश्तेदारों के सामने पैसे न मांग लें तो मेरी बेइज्जती हो जायेगी। क्योंकि उस समय रिश्ते की बात चली हुई थी। तब लाला जी ने कहा कि वास्तव में मैं तेरे घर पैसे वसूलने ही आया था, काफी समय हो गया था व मुझे सख्त जरूरत थी परन्तु आपके रिश्तेदारों को देखकर मैं बहाना बना कर लौट आया इज्जत सभी की एक जैसी होती है।

एक व्यापारी होने के नाते उधार देना व वसूलना आपका पेशा था लेकिन आप इसमें भी मानवीय दृष्टिकोण को ध्यान में रखते थे। मुनाफे के बारे में आप कहा करते थे कि इतना ही होना चाहिए जितना दाल में नमक। असंख्य उदाहरण हैं कि आपने जरूरतमन्दों को उधार देकर मदद की। कई बार कुछ लोग अपनी मज़बूरी के कारण वायदेनुसार पिछला भुगतान नहीं कर पाते तथा लड़की की शादी के कारण नए उधार की आवश्यकता पड़ गई तो आपने उनकी स्थिति को भांपते हुए मदद की। गांव का कोई भी व्यक्ति सही कार्य के लिये उनके पास पैसे उधार मांगने आ जाता तो आप उसे निराश नहीं करते। कहा करते थे कि मैंने गरीबी देखी है, इसी गांव में एक समय मुझे किसी ने दो रूपये उधार नहीं दिये थे। आज परमात्मा का दिया हुआ सब कुछ है तो मैं किसी को निराश क्यों करूं ? आपका कहना था मनुष्य को सौ हाथ से कमाना चाहिए–हजार हाथ से बांटना चाहिए, देने वाला प्रभु है। हर कार्य जिन्दा दिली से करना चाहिए। आप कहा करते थे कि 'जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक जीते हैं।'

आध्यात्मिक विचार : अपने जीवन के ८७ वें वर्ष में आपने एक दिन यह कह कर सबको परेशान कर दिया कि यह मेरा आखिरी वर्ष है। फिर आप अपने पूरे परिवार, नाते रिश्तेदारों के साथ एक बस द्वारा उत्तराखण्ड की यात्रा पर चले गये। वहाँ कुदरत के नज़ारे देखे। गंगा के शीतल जल व बद्रीनाथ के उष्ण जल में नहाए। बद्रीनाथ में एक संन्यासी आपकी वैदिक विचारधारा से इतने प्रभावित हुए कि घण्टों आपसे वार्तालाप करते रहे। अन्त में उन्होंने कहा कि संन्यासी तो मैं हूँ लेकिन ज्ञानी आप हैं, आज आपने मेरे ज्ञान–चक्षु खोल दिये, मैं आज तक यूं ही मूर्ति पूजन में फंसा रहा।

यात्रा की वापसी पर श्रीनगर में आपने अपने जीवन का आखिरी प्रवचन दिया। आपने कहा कि गंगा नहाने से यदि पाप धुलता या स्वर्ग मिलता तो यह मछलियाँ आज तक यूं ही गोते न खातीं। स्वर्ग–नरक कोई विशेष स्थान नहीं है यदि अपने घर में सुख–सुविधाएं उपलब्ध हों, भय–चिन्ता से मुक्त हों, शान्ति हो, काया सुखी हो, बेटे आज्ञाकारी हों, पत्नी देवी स्वरूप हो तो यहीं स्वर्ग है अन्यथा नरक है। यह सुख शान्ति अपने शुभ कर्मों से ही प्राप्त होती है। तीर्थ यात्रा करने से स्वर्ग नहीं मिलता, पाप समाप्त नहीं होते यह तो परमात्मा

की विभिन्न रचनाओं को देखने का माध्यम है, इससे दूर दराज के क्षेत्रों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है, प्राकृतिक सौंदर्य देखने को मिलता है। कभी कभार किसी स्थान पर कोई महात्मा भी मिल जाता है, यदि उस द्वारा बताए मार्ग पर चलें तो अवश्य कल्याण हो सकता है लेकिन कल्याण फिर भी कर्मों से ही होगा मात्र दर्शनों से नहीं।

आपने कहा, मनुष्य को कोई भी कार्य करते समय यह सोचना चाहिए कि परम पिता परमात्मा मुझे देख रहा है फिर कभी गलत काम नहीं होगा। हर समय ईश्वर का धन्यवाद करते रहना चाहिए। हर समय ईश्वर से डरना चाहिए–जो पाप कर्म करे वो तो डरे ही, जो अच्छे कर्म करे वह भी डरे कि कहीं अंहकार न हो जाए। मौत को हमेशा याद रखना चाहिए, तथा तैयारी भी रखनी चाहिए न जाने कब बुलावा आ जाए।

'अगाह अपनी मौत का कोई वसर नहीं
सामान सौ वर्ष का पल की खबर नहीं।'

श्राद्ध, तर्पण आदि विषय पर भी आपने कहा कि अपने जीवित माता–पिता के प्रति सच्ची श्रद्धा रखना, उनको हर तरह से संतुष्ट रखना व उनकी सेवा करना ही श्राद्ध व तर्पण है। वे कहा करते थे कि,

सब से बड़ी है आदत–माँ बाप की है खिदमत
सबसे बड़ी इबादत–माँ बाप की है खिदमत
अगर दुनिया से रूबरु होना चाहते हो–
तो करो माँ बाप की खिदमत

आपने कहा हर समय ओ३म् का जाप करते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं ८७ वर्ष के अनुभव से कह सकता हूँ कि महर्षि दयानन्द द्वारा बताया गया रास्ता ही सर्वोत्तम है।

इस उपदेश के बाद आप हरिद्वार होते हुए २६ जुलाई, १९९३ को हमीरपुर पहुँचे, वहाँ अपनी बेटी के पास थोड़ा विश्राम किया। शाम को अपने बेटे से गाड़ी मंगवाई। बेटी व उसके सास–ससुर का मेहमानवाजी के लिए धन्यवाद किया, उन्होंने लाख रोका कि आज यहीं रुक जाओ लेकिन आप नहीं माने कहा कि,

'अब समय हो गया है जल्दी करो।
दुनिया के जो मजे हैं हरगिज कम न होंगे
चर्चे यहीं रहेंगे अफसोस हम न होंगे।'

यह कह कर बेटी से विदा लेकर अपनी गाड़ी में बैठकर, घर धनेटा को चल पड़े। अभी गाड़ी १०० मीटर भी नहीं चली थी कि आपने कहा, थक गया हूँ कुछ आराम करना है और सीट पर लेटते हुए तीन बार ओ३म् का उच्चारण किया। धर्मपत्नी ने सोचा शायद लेट गये होंगे नींद आ गई होगी लेकिन आप तो नश्वर शरीर को छोड़ कर ब्रह्म में लीन हो गये थे।

स्व. लाला मथरा दास के प्रति महापुरूषों की श्रद्धांजलियाँ :

'वे ऐसा विशाल वृक्ष थे जिसकी शीतल छाया में पारिवारिक जनों ने ही नहीं अपितु अनेक पथिकों ने शीतल छाया पाई है। हमारी बुजुर्ग पीढ़ी का एक सशक्त स्तम्भ ढह गया, ऐसा मार्ग दर्शक अब कहाँ मिलेगा।'

–स्वामी समेधानन्द जी, दयानन्द मठ चम्बा

'मुझे लाला जी के देहावसान का समाचार पढ़ कर हार्दिक कष्ट हुआ।'

–गुलशेर अहमद, राज्यपाल (हि. प्र.)

'लाला जी एक महात्मा थे उनकी मृत्यु शोक योग्य नहीं है, वह दिव्य आत्मा अपने महान् परोपकार, त्याग, तप के कारण ही अगलें यशस्वी, ऐश्वर्य सम्पन्न श्रीमान परिवार में जन्म प्राप्त कर उस परिवार को भी आनन्दित–हर्षित कर रहे होंगे, अतः शोक कैसा ?'

–स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती

'श्री मथुरा दास जी नन्दा ने अपने जीवन के हर पल व हर सुख–दुःख को परम पिता परमात्मा के निमित मानकर अपना सफर पूरा किया हैं।'

हजारों वर्ष शबनम अपनी वेनूरी पे रोती है
होता है पैदा तब कहीं दिदावर ऐसा।।

–ओम मरवाह, प्रधान, आर्य समाज
जोगिन्द्र नगर, जिला मण्डी (हि. प्र.)

'मथरादास जी आर्य समाज की विचारधारा में पूर्ण निष्ठा से कार्य किया करते थे। आर्य समाजों, दीन–दुखियों को दान देना तथा सहायता करना वे अपना कर्त्तव्य समझते थे।'

–मास्टर गोबिन्द राम आर्य
चोलथरा, जिला मण्डी (हि. प्र.)

'लाला मथरा दास जी नन्दा के स्वर्ग सिधारने से इस क्षेत्र ने एक महान् स्वतन्त्रता सेनानी एवं समाज सेवक खो दिया है। इनसे हुए इस रिक्त स्थान को अन्य कोई भी व्यक्ति पूर्ति नहीं कर पायेगा। उनका पंचायती राज संस्थाओं में सहयोग हमेशा–हमेशा लोगों को याद रहे। लाला जी सच्चे देश भक्त थे।'

–रघुवीर सिंह ठाकुर, चेयरमैन
पंचायत समिति नादौन

जैसे अग्नि में तपकर सोना 'कुन्दन' बन जाता है वैसे ही लाला मथरा दास जीवन में संघर्षों का दृढ़ता से मुकाबला करते हुए 'महान पुरूष' बने। उनके जीवन से हमें संकटों से जूझने की प्रेरणा मिलती है।

–आर्य वन्दना परिवार, सुन्दरनगर

ओ३म्

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। यजुर्वेद ३६/३

दयानन्द मठ चम्बा के चौंतीसवें वार्षिकोत्सव तथा दुर्लभ एवं अभूतपूर्व दिन रात अनवरत रूप से चलनें वाले महान् ''शारद यज्ञ'' वर्ष २०१४ का

सस्नेह निमंत्रण पत्र

आदरणीय

सादर नमस्ते। रावी नदी के सुरम्य तीर पर स्थित पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य में स्थित आपकी प्रिय संस्था दयानन्द मठ चम्बा की पावन यज्ञशाला में २१ सितम्बर से २४ सितम्बर २०१४ तक मठ का चौंतीसवां वार्षिकोत्सव एवं २५–२६ सितम्बर को दिन रात अनवरत रूप से २७ घंटे चलने वाला विश्व इतिहास का दुर्लभ एवं पावन शारद यज्ञ चौदहवीं बार आयोजित किया जाएगा। आप सादर आमंत्रित हैं।

पुण्यात्माओं ! यह दिव्य शारद यज्ञ आपको बुला रहा है। विश्व इतिहास के इस दुर्लभतम एवं पावनतम शारद यज्ञ में भाग लेकर यश एवं पुण्य के भागी बनें। प्रभु कल्याण करेंगे। भगवान नें ऋग्वेद में स्वयं इस यज्ञ को अनाप्यं अर्थात् दुर्लभ यज्ञ कहा है।

कार्यक्रम :

वार्षिकोत्सव २१ सितम्बर रविवार से २४ सितम्बर बुधवार तथा दुर्लभ शारद यज्ञ २५ सितम्बर बृहस्पतिवार तदनुसार अश्विन शुक्ल १ को प्रातः ६:३० बजे प्रारम्भ हो जाएगा । इस यज्ञ के मुख्य यजमान आचार्य महावीर सिंह जी होंगे। यह यज्ञ दिन रात अनवरत चलेगा तथा २६ सितम्बर शुक्रवार अश्विन शुक्ल २ को प्रातः ६ बजे इस महान् यज्ञ की पूर्णाहुति हो ज़ाएगी। इसके बाद प्रसाद वितरण होगा। कृपया इस यज्ञभूमि में आहुतियां समर्पित करनें अवश्य पधारिये।

ऋग्वेद में एक प्रसिद्ध मंत्र है :–

"वि ये दधुः शरदं मासमादहर्यज्ञमक्तुं चादृचम्।
अनाप्यं वरूणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत"।।

ऋ० ७/६६/११

पदार्थ –(ये) जो विद्वान् (शरदं मास) शरद मास के प्रारम्भिक (अहः अक्तुं यज्ञं) दिन रात के यज्ञ को (ऋचं) ऋग्वेद की ऋचाओं से (वि दधुः) भली भांति करते हैं वह (अनाप्यं) इस दुर्लभ यज्ञ को करके (वरूणः) सबके पूजनीय (मित्रं) सर्वप्रिय(अर्यमा) न्यायशील तथा (राजानः) दीप्तिमान होकर (क्षत्रं) क्षात्र धर्म का (आशत) लाभ प्राप्त करते हैं।

भावार्थ : शरद ऋतु के आरम्भ में जो यज्ञ किया जाता है उसका नाम शारद यज्ञ है। यह यज्ञ दिन रात अनवरत किया जाता है। जो विद्वान् अनुष्ठान परायण होकर इस वार्षिक यज्ञ को पूर्ण करते हैं वह दीप्तिमान होकर सबके सत्कारार्ह अर्थात सत्कार योग्य होते हैं ।

ब्रह्मन स्वराष्ट्र में हो द्विज ब्रह्म तेज धारी।
क्षत्रिय महारथी हों अरिदल विनाशकारी।।

सशक्त राष्ट्र का आधार वीर पुरूष हुआ करते हैं । आइये इसी भावना को हृदय में संजोए दिव्य शारद यज्ञ का अनुष्ठान करें। यज्ञ के ब्रह्मा यजमान एवं श्रद्धालू भक्तों की दिव्य भावना से राष्ट्र में ऐसे वीर पुरूष जन्म लें जो आर्यों का सार्वभौम चक्रवती साम्राज्य स्थापित करके संसार में सुख समृद्धि के द्वार खोल दे। वेद का आदेश है कि धर्मात्मा विद्वान् सन्यासी राष्ट्र में क्षात्र धर्म की वृद्धि हेतु इस यज्ञ को करें। राष्ट्र के वैभव की वृद्धि के लिये महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र जी, महर्षि व्यास जी, महर्षि परशुराम जी आदि स्वनामधन्य ऋषि सदैव संलग्न रहते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती अपनी प्रातः कालीन प्रार्थनाओं में प्रभु से यही प्रार्थना करते थे कि भगवन् आर्यावर्त में आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित हो।

मैं यद्यपि पांच मास से काफी अस्वस्थ चल रहा हूं। चलना फिरना कठिन हो गया है फिर भीं इस पावन शारद यज्ञ को करनें के लिये प्रिय आचार्य महावीर जी, प्रिय सौभाग्यशाली ऋषि कुमार एवं अखण्ड सौभाग्यवती सरस्वती देवी के उत्साह से तथा आप सबके उत्साह से शक्ति पैदा हो जाती है। बहुत से हितैषी कहते हैं कि आप इतनें कष्ट साध्य संकल्प क्यों ले लेते हैं ? उन आदरणीय महानुभावों से मेरा यही निवेदन है कि कष्ट के बिना तप सिद्ध होता ही नहीं है। स्वाध्याय करते हुए मैंने महाभारत आदिं पर्व में पढा कि नैमिषारण्य क्षेत्र में कुलपति शौनक जी नें बारह वर्ष का सत्संग सत्र किया था। यह महाभारत युद्ध के छत्तीस वर्ष बाद हुआ था। स्वयं श्री महर्षि व्यास जी इसमें पधारे थे । यह पढकर मेरे मन में भी दीर्घकालीन सत्संग सत्र करनें की प्रेरणा हो गई। इसी प्रकार प्रश्नोपनिषद में आया है कि भगवान पिप्पलाद ऋषि के पास ब्रह्म के सम्बन्ध में जिज्ञासाओं के समाधान हेतु छः ऋषि पहुंचे तो उन ऋषि नें उनसे कहा कि आप एक वर्ष तक तपस्यापूर्वक यहां निवास करें। इसके पश्चात अपनें अपनें प्रश्न पूछना। इन घटनाओं नें मेरे मन

में यह भाव उत्पन्न कर दिया कि बिना दीर्घकालीन तप के कार्यों में सिद्धि नहीं मिल सकती। अतः मठ में एक वर्ष के यज्ञों की परम्परा प्रारम्भ हो गई। मेरे मन में यह बात बैठ गई कि दीर्घकाल तक शुभकर्मों का अनुष्ठान करना चाहिये। इससे आप सब निष्ठावान भक्तों के द्वारा भी महान तप हो जाता है। हमारे पास बहुत आन्तरिक शक्तियां हैं। उन्हें जगानें की आवश्यकता है। गुरूजनों द्वारा प्रदत्त शिक्षा द्वारा यह आन्तरिक शक्तियां जब जाग उठती हैं तो शिष्यों का कल्याण हो जाता है। जो हमारी शक्तियों को जागृत नहीं कर सके वह तो शिक्षा नहीं है। महान् गुरू विरजानन्द जी ने महर्षि दयानन्द की शक्तियों को जगा दिया था तभी वह वैदिक ज्ञान की धारा प्रवाहित करनें में सक्षम हो गए थे। अतः आईये व इस तीर्थ में जो नैमिषारण्य तीर्थ की भांति दीर्घकालीन सत्संग सत्रों एवं महान् यज्ञों का केन्द्र बनता जा रहा है, उसमें सम्मिलित होकर अपनें सौभाग्य को बढांए। भगवान नें वेद में कहा है :–

प्र यज्ञ एतु हेत्वो न सप्रिरूद्यच्छ ध्वं समनसो घृताची।
स्तृणीत बर्हिरध्वराय साधूर्ध्वाशोचीषि देवपून्यस्थुः।।

ऋ० ७/४३/२

महर्षि द्वारा इसका भावार्थ इस प्रकार लिखा गया है :– हे गृहस्थों ! जिससे वायु जल और औषधि पवित्र होती है उस यज्ञ का निरन्तर अनुष्ठान करों। यज्ञ धूम से अन्तरिक्ष ढांपो अर्थात् भर दो। आइये ! हम सब मिलकर इतनी घृत सामग्री की आहुति डालें जिससे पृथिवी से लेकर अन्तरिक्ष तक इस यज्ञ धूम से भर उठे। भजन की एक पंक्ति याद आ रही है : "हम भी वह काम करें, जब तक दुनिया रहे सूरज की तरह चमकें"। अतः इस पावन एवं अद्वितीय दिन रात लगभग २७ घंटे तक निरन्तर चलनें वाले यज्ञ में भाग लेनें अवश्य पहुंचे। श्रद्धालु जन किसी न किसी कामना को लेकर यज्ञ को किया करते हैं। किन्तु हम तो राष्ट्र को तेजस्वी सम्राट मिले इस कामना से इस यज्ञ को कर रहे हैं। यह महान् संकल्प है। प्रभु इस आशय को सफल करे। इस शारद यज्ञ को अनाप्यं अर्थात् दुर्लभ इसीलिये कहा गया है क्योंकि इसमें हम अपने व्यक्तिगत सुखों एवं कामनाओं की पूर्ति का संकल्प न लेकर राष्ट्रीय गौरव को बढानें वाले अतः चकवर्ती आर्य सम्राट का उदय हो इस दिव्य कामना से यज्ञ का अनुष्ठान कर रहे हैं। यह दुर्लभ संकल्प है।

<u>यज्ञ का कार्यक्रम</u> :– दयानन्द मठ चम्बा का चौतीसवां वार्षिकोत्सव २१ सितम्बर रविवार से २४ सितम्बर बुधवार सन् २०१४ तक आयोजित किया जाएगा

यज्ञ का समय :– प्रातः ६:३० बजे से ६:३० बजे तक रहेगा। सायंकाल ४ बजे से ७:३० बजे तक रहेगा।

<u>अभूतपूर्व एवं दुर्लभ शारद यज्ञ</u>

विश्व इतिहास के इस अभूतपूर्व शारद यज्ञ का अनुष्ठान २५ सितम्बर बृहस्पतिवार तदनुसार अश्विन शुक्ल १ को प्रातः ६:३० बजे प्रारम्भ हो जाएगा। यह यज्ञ दिन रात अनवरत रूप से चलेगा। २६ सितम्बर शुक्रवार अश्विन शुक्ल २ को प्रातः ६ बजे इस महान् यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न होगी। कृपया अवश्य श्रद्धापूर्वक सपरिवार भाग लें। इस वर्ष यह यज्ञ इस यज्ञशाला में चौदहवीं बार होगा। दुर्लभ अवसर है इस दुर्लभ यज्ञ में भाग लेनें का। चम्बा निवासी भाई बहिनों युवक युवतियों एवं नन्हे नन्हे बाल गोपालों के लिये तो पुण्य कमानें का अपूर्व अवसर है। मैं आप सबका इस तीर्थ में पधारने पर धन्यवाद करूंगा। मेरी इच्छा है कि हमारे वा आप सबके पुण्यों के फलस्वरूप दयानन्द मठ चम्बा अब नैमिषारण्य तीर्थ की भांति बहुत बड़े–बड़े यज्ञों एवं सत्संग सत्रों का पावनतम केन्द्र बन जाए। मैं अस्वस्थ था अभी भी हूं। किन्तु दीर्घकालीन यज्ञों एवं सत्संग सत्रों के आयोजन की भावना नें जीवन में उमंग व उत्साह भर दिया है । प्रभु इस आशय को सफल करें।

मठ द्वारा संचालित इन महान् परोपकार के कार्यों हेतु आप सब उदार हृदय से अपना अपना योगदान दीजिये। मठ को दिये दान पर आपको आयकर धारा ८०–जी के अन्तर्गत छूट मिलनें का प्रावधान है। कृपया पावन यज्ञ हेतु अपना अमूल्य सहयोग चैक या ड्राफ्ट "दयानन्द मठ चम्बा" इस नाम से भेजियेगा। भारतीय स्टेट बैंक में मठ का खाता संख्या ११११४६८३३८०६ है। देखिये ! हम सब मिलकर इस धरती को कितना महान् बना सकते हैं। एक नैमिषारण्य तीर्थ महाभारतकाल में विख्यात था तथा उसी का रूप अब यह दयानन्द मठ चम्बा ले, यही कामना भावना और ईश्वर से प्रार्थना है । हार्दिक मंगलकामनओं के साथ

निवेदक :

स्वामी सुमेधानन्द — अध्यक्ष — दयानन्द मठ चम्बा — चलभाषा : ०६४१८०१२८७१

आचार्य महावीर सिंह — उपाध्यक्ष/प्रबंधक — दयानन्द मठ चम्बा — चलभाष : ०६८०५०२२८७१

एवं

समस्त सदस्य प्रबन्धक कमेटी

दयानन्द मठ चम्बा, चम्बा–१७६३१० (हि० प्र०)

दूरभाष – ०१८६६–२२२८७१

पट्टी क्यों ?

•कृष्ण चन्द आर्य, सम्पादक

महाभारत के युद्ध के लिए बहुत सी विभूतियें योगश्वर श्रीकृष्ण को दोषी ठहराती हैं। उनके मतानुसार यदि योगेश्वर कृष्ण चाहते तो युद्ध की विभीषिका को टाला जा सकता था। मैं समझता हूँ कि इस देश से गृह युद्ध टालने के लिए श्री कृष्ण महाराज ने अपने पूरी ऐड़ी चोटी और रणनीति का प्रयोग किया लेकिन वे भारतवर्ष से युद्ध के भयंकर परिणामों को टालने में असमर्थ रहे। कर्ण, दुर्योधन और शकुनि की तिकड़ी ने उनके शांति के समस्त प्रयत्नों को पानी फेर दिया। युद्ध को अवश्यंभावी समझते हुए इसे टालने के लिए युक्ति, तर्क और धर्म का सहारा लेते हुए श्रीकृष्ण ने भरी सभा में द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और भीष्म पितामह की उपस्थिति में धृतराष्ट्र के आगे एक प्रस्ताव रखा कि यदि पाचं पांडवों को केवल पांच गांव दे देते हैं तो मैं विश्वास दिलाता हूं कि पांडव मेरे इस शांति के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेंगे और भारत की भूमि रक्त रंजित होने से बच जाएगी। श्रीकृष्ण द्वारा प्रस्तुत इस सुझाव को द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, विदुर और भीष्म पितामह तथा धृतराष्ट्र ने बहुत पसंद किया। पितामह भीष्म ने संबोधित करते हुए कहा कि श्रीकृष्ण द्वारा प्रस्तुत किया हुआ प्रस्ताव अति उत्तम है। दुर्योधन, कर्ण और शकुनि को इसे अवश्यमेव स्वीकार कर लेना चाहिए और भारतवर्ष से नरसंहार को रोक लेना चाहिए। भीष्म पितामह के तर्कों का समर्थन राजा धृतराष्ट्र ने भी किया और दुर्योधन को श्रीकृष्ण के इस प्रस्ताव पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगाने हेतु कहा लेकिन वह कहां मानने वाले थे। उन्होंने श्रीकृष्ण के इस शांति के प्रस्ताव को भी अस्वीकृत कर दिया। अब सिवाय युद्ध के कोई और चारा नहीं रह गया था। श्रीकृष्ण के प्रस्थान के समय दुर्योधन, कर्ण और शकुनि की तिकड़ी ने अपने साथ भोजन करने हेतु निवेदन किया लेकिन उन्होंने कहा या तो तुम्हारी आंखों में मेरे प्रति प्यार होता और मेरे द्वारा प्रस्तुत शांति के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया जाता अथवा मेरे उपर कोई विशेष आपत्ति होती उस दशा में मैं आपके भवन में भोजन का प्रस्ताव स्वीकार कर लेता। इन दोनों बातों में कोई भी बात नहीं दिखलाई दे रही है। मुझ पर न तो कोई आपत्ति आई है और न ही आप की आंखों में मेरे प्रति प्रेम है। जब श्रीकृष्ण ने प्रस्थान किया तो रास्ते में उन्होंने कर्ण को अति गोपनीय रहस्य बताते हुए कहा कि वह सूत पुत्र नहीं अपितु कुन्ती पुत्र है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि वह दुष्ट दुर्योधन का साथ देना बंद कर दे तो स्वतः ही भारतवर्ष के घर–घर में सत्य और अहिंसा का साम्राज्य हो जाऐगा लेकिन कर्ण ने भी श्रीकृष्ण के शांति प्रस्ताव को पलीता लगाते हुए कहा कि मैं कभी भी और किसी भी स्थिति में दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ूंगा जिसने विपत्ति के समय मुझे अंग देश का राजा बनाया। उन्होंने योगीराज श्रीकृष्ण को यह भी साफ बता दिया की पांडव ही विजयी बनेंगे। श्रीकृष्ण के कहने पर कि विजयी तो कोई भी हो सकता है तुम इस गलत विचार को अपने दिल और दिमाग में क्यों स्थान दे रहे हो। इस पर कर्ण ने कहा कि प्रातः और सांय जब मैं ध्यान में बैठता हूं तो कोई अज्ञात भय मेरे हृदय को विचलित कर देता है। इसलिए "यतो धर्मोस्ततः जये"। धर्म इस समय पांडवों का साथ दे रहा है और उनके पीछे आपकी दिव्य और अनमोल शक्तियें साथ दे रही हैं। फिर भी मैं कौरवों का ही साथ दूंगा। इस पर श्रीकृष्ण शांति के सभी द्वारों को बंद होता देख बहुत भावुक होकर कर्ण से बोले, "हे कर्ण, यहां से जाकर द्रोणाचार्य, कुल गुरू कृपाचार्य और भीष्म पितामह आदि जिम्मेदार व्यक्तियों को यह कह दो कि अब पांडव कुरूक्षेत्र के मैदान में ही अपने भाग्य का निर्णय करेंगे।

युद्ध की उमड़ रही घटा को बादलों के बीच में चमक रही बिजली भी इन लोगों का मार्गदर्शन नहीं कर सकी। विदुर आदि महात्मा इस हक में नहीं थे कि गांधारी अपने दोनों आंखों में पट्टी बांध कर महान् पतिव्रता होने का दम्भ भरे। विदुर चाहते थे कि वे अपने अन्धे पति की आंखे बन कर उसका तथा अपनी संतानो का पथ प्रदर्शन करे। महाराज धृतराष्ट्र स्वयं ही अंधे थे और उनकी आंखे केवल मात्र गान्धारी थी जिसने पतिव्रत धर्म के कारण अपनी दोनों आंखों पर पट्टी बांध रखी थी जिस कारण न तो वह अन्धी आंखों से अन्धे पति की लाठी बन सकी और न ही अपने पुत्रों को विनाश के मार्ग पर जाने से रोक सकी। दुर्योधन को विदुर जैसा राजनीतिज्ञ यह कहता रहा "जानामि धर्मम् नतमें प्रवृति, दानामि अधर्मम् नतमें निवृति" केवल दुर्योधन, कर्ण और शकुनि की हठ्धर्मिता के कारण युद्ध के बादलों को नहीं टाला जा सका। जिसका केवल और केवल मात्र दायित्व दुर्योधन की माता गांधारी पर जाता है जिसने समय रहते अपनी आंखों की पट्टी को नहीं खोला और देश का सर्वनाश होने से नहीं बचाया। कुरूक्षेत्र के मैदान में १८ दिन घमासान संग्राम में हर दिन हजारों निरपराध व्यक्ति मृत्यु की गोद में सोते चले गये। अंत में बही हुआ जो श्रीकृष्ण नहीं चाहते थे। भारी मन से द्वारिका प्रस्थान करने से पूर्व राजरानी गांधारी के चरण स्पर्श करने के लिए राजभवन में श्रीकृष्ण के पधारने पर और उनके आने का समाचार सुनकर गांधारी अपने क्रोध को वश में न कर सकी और उसने

श्रीकृष्ण को शाप देते हुए कहा जैसे सौ पुत्रों के होते हुए मेरी कोख सुनी हो गई बैसे ही यदि मैंने पतिव्रत धर्म निभाया है तो मैं तुम्हें शाप देती हूँ कि तुम्हारा यदुवंश भी लड़–झगड़ कर ही नष्ट हो जाए। महारानी के चरणों को स्पर्श किये बिना ही श्रीकृष्ण ने कहा ठीक है माता, मैं तो आपके चरण स्पर्श करने आया था, लेकिन शाप के कारण मैं ऐसा नहीं कर सका और मैं वापिस जा रहा हूं। अब इस महान् दुख में श्रीकृष्ण कुछ भी नहीं कर सके और गांधारी ने अपने कानों से अपने सौ पुत्रों का विदाई का शोक समाचार जाना। उनके मन–मस्तिष्क में श्रीकृष्ण को शाप देते हुए यह बात क्यों समझ में नहीं आई कि उन्होंने इस युद्ध को रोकने के लिए ऐड़ी–चोटी का जोर लगाया। लेकिन उसके अपने ही पुत्र और उसके भाई शकुनि तथा कर्ण की तिकड़ी ने श्रीकृष्ण के शांति के प्रयासों को पलीता लगा दिया और न्याय प्राप्त करने के लिए कुरूक्षेत्र के मैदान में जाने के लिए बाध्य कर दिया। अगर समय रहते हुए माता गांधारी ने अपनी आंखों पर लगी पट्टी को उतार लिया होता तो शायद हजारों व्यक्तियों के असमय काल का ग्रास बनने से बचाया जा सकता था। अंत में मुझे यही कहना है कि आंखों में बंधी उस पट्टी का क्या जो न अपने देश की और न परिवार की रक्षा कर सके।

भलाई से ही बुराई दूर हुआ करती है,
अहिंसा से ही हिंसा चूर हुआ करती है।
आंखों से पट्टी हटाकर ही,
नारियां देश की मशहूर हुआ करती हैं।

आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी के तत्त्वावधान में गांव हरवाणी में श्रावणी पर्व का आयोजन

आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी के तत्त्वावधान में गांव हरवाणी में स्थित कोयला माता के मन्दिर के प्रांगण में श्रावणी पर्व का आयोजन दिनांक १५ अगस्त २०१४ से लेकर १८ अगस्त (जन्माष्टमी) तक बड़ी श्रद्धा व उत्साह से मनाया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन माता कोयला मन्दिर कमेटी की ओर से किया गया। इस कार्यक्रम में वेद–प्रचारार्य पूज्य स्वामी सुखानन्द जी (हरियाणा से) गुरूकुल फतुही (श्री गंगानगर) राजस्थान की छः ब्रह्मचारिणियों सहित पधारे। यज्ञ के ब्रह्मा का कार्यभार श्री आचार्य रामफल सिंह आर्य महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हि. प्र. एवं प्रधान आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी द्वारा वहन किया गया। कार्यक्रम में प्रातःकाल ७.०० से ६.३० बजे तक यज्ञ एवं भजन तथा प्रवचन, दोपहर में २.०० से ४.०० बजे तक भजन प्रवचन एवं रात्रि ८.०० से १०.०० बजे तक भजन तथा उपदेश चलते रहे। इस कार्यक्रम में गांव हरवाणी के लोगों ने बड़ी श्रद्धा व उत्साह पूर्वक भाग लिया तथा प्रतिदिन तीन–तीन हवन कुण्डों पर ६.०० यजमान सपत्नीक बनते रहे। प्रत्येक कार्यक्रम में श्रोताओं की भीड़ लगभग १५०–२०० के आस–पास रही।

अन्तिम दिन का जन्माष्टमी का कार्यक्रम बहुत भव्य एवं दर्शनीय था। इस दिन श्रोताओं से पूरा पाण्डाल खचाखच भरा हुआ था। यह कार्यक्रम प्रातः ८.०० बजे से १.३० बजे तक चला। यज्ञोपरान्त श्रीमती रानी आर्या, चित्रा आर्या, गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियों एवं श्री लीला नरूला के भजन श्री कृष्ण जी महाराज के बारे में रखे गये। इसके उपरान्त श्री नरेश काम्बोज, श्री आचार्य रामफल सिंह आर्य एवं श्री स्वामी सुखानन्द जी महाराज के प्रेरणादायक प्रवचन हुए। अनेकों लोगों ने अण्डा, मांस, मछली, सिग्रेट, शराब आदि छोड़ने का जहाँ व्रत लिया वहीं सक्रिय रूप से आर्य समाज से जुड़ने का भी संकल्प लिया। इस अवसर पर निःशुल्क आयुर्वैदिक चिकित्सा शिविर भी लगाया गया जिसमें स्वामी सुखानन्द जी एवं उच्च कोटि के वैद्य श्री चरण सिंह दहिया द्वारा अनेकों रोगियों की चिकित्सा की गई।

उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम का सारा भार श्री श्रवण कुमार आर्य, प्रान्तीय संचालक आर्यवीर दल हि.प्र. ने वहन किया और भविष्य में भी गांव में इसी प्रकार के आयोजनों का आश्वासन दिया। आज वास्तव में आर्य समाज को चार दिवारी से बाहर निकल कर गांव में जाने की आवश्यकता है। गांव हरवाणी के निवासियों ने अपने गांव में आर्य समाज की स्थापना का भी संकल्प लिया है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में भी श्रवण कुमार की तो केन्द्रिय भूमिका थी ही, उनके साथ–साथ सत्यव्रत आर्य, रूपलाल चौहान, कमल देव चौहान, रूप लाल जंजुहा, भीम सिंह, दिलाराम, नन्दलाल, पंकज उर्फ पकू, विक्की, सेवक राम, पालू, रामचद्र आर्य आदि का श्रेष्ठ एवं सराहनीय योगदान प्राप्त हुआ जबकि श्री चमन, नागूराम, मनीष तथा अमर का योगदान साऊंड सिस्टम तथा संगीत प्रबन्धन के लिये मिला। आर्यवीर दल हि.प्र. के मन्त्री श्री पवन आर्य द्वारा स्वामी सुखानन्द जी, आचार्य रामफल जी, नरेश कम्बोज तथा वैद्य चरण सिंह जी को सम्मानित किया गया तथा इस अवसर पर रू ५१०० का दान आर्य समाज सुन्दर नगर कालौनी को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम ऋषिलंगर के साथ सम्पन्न हुआ।

–माँ कोयला मन्दिर सेवा समिति, हरवाणी

स्वर्गीय श्रीमती ईश्वरी देवी एवम् श्री मथरा दास नन्दा का परिवार

इनकी दो बेटियों व दो दामादों का निधन हो गया है। यह अपने पीछे तीन बेटे व ४ पुत्रीयाँ छोड़ गए हैं।

१. श्री सत प्रकाश नन्दा : यह धनेटा के सफल व्यापारी व प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। नादौन पंचायत समिति के दो बार सदस्य निर्वाचित हुए व एक बार उपाध्यक्ष रहे।

शान्त स्वभाव व मृदुभाषी हैं। इनकी धर्म पत्नी का नाम मृदुला है। दैनिक यज्ञ अपने घर में करते हैं। सामाजिक संठगनों को दान करते रहते हैं।

२. श्री योग प्रकाश नन्दा : यह वर्तमान में परवाणू में सहायक नगर योजनाकार के पद पर कार्यरत हैं। ट्रेड यूनियन से भी जुड़े हैं। हि. प्र. राज्य विद्युत परिषद् जूनियर इंजीनियर संघ के ४ वर्ष राज्य प्रधान रहे। आर्य समाज हमीरपुर के १७ वर्ष तक मन्त्री रहे। सन् १९९७ से लेकर २०१४ तक आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के अन्तरंग सदस्य, उप मन्त्री व संगठन मन्त्री रहे। जिला हमीरपुर में आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती वृन्दा नन्दा है जो हमेशा धार्मिक कार्यों में इनका साथ देती रहती हैं। दोनों दैनिक यज्ञ करते हैं। घर में यज्ञशाला भी बनाई है।

३. श्री चन्द्र प्रकाश नन्दा : यह धनेटा के प्रतिष्ठित एवम् सफल व्यापारी हैं। गरीबों व विधवाओं को हर महीने हजारों रू. पैंशन के रूप में दान करते हैं। सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। इनकी पत्नी श्रीमती निशा नन्दा हैं जो धनेटा महिला सहकारी समिति की सचिव हैं तथा जीवन बीमा निगम का कार्य भी करती हैं। यह दोनों भी दैनिक यज्ञ घर में करते हैं तथा घर में यज्ञशाला भी बनाई है।

४. श्रीमती देवेन्द्र कुमारी : इनके पति का नाम श्री ओम मरवाह है। यह जौगिन्द्र नगर का एक बहुत प्रतिष्ठित परिवार है। विशुद्ध धार्मिक परिवार है। श्री ओम जी आर्य समाज जोगिन्द्रनगर के प्रधान हैं। जोगिन्द्रनगर के ही प्रतिष्ठित भारतीय पब्लिक स्कूल के संस्थापक सदस्य हैं। आप का एक बेटा बी.टैक करने के बाद स्वामी राम सुख दास की शरण में चला गया और सन्त बन गया है तथा गाय की सेवा, रामायण व गीता के प्रचार में अपने आप को समर्पित कर दिया है। प्रतिदिन दैनिक यज्ञ करते हैं।

५. श्रीमती सुमन कुमारी : इनके पति का नाम श्री रविन्द्र प्रसाद सरीन है जो शिक्षा विभाग से प्रिंसीपल के पद से सेवानिवृत हुए हैं। स्पष्टवादी एवम् धार्मिक विचारों से ओत प्रोत हैं। प्रतिदिन दैनिक यज्ञ करते हैं तथा यज्ञशाला का निर्माण भी किया है।

६. श्रीमती उमा पुरी : इनके पति का नाम श्री सुशील पुरी है जो नरवाणा योल कैण्ट के एक प्रतिष्ठित परिवार से सम्बन्धित हैं। धार्मिक विचारों व मृदुभाषी हैं। इनकी एक खासियत है कि यह सामान बिना लिफाफे के तोलते हैं तोलने के बाद लिफाफे में डालते हैं।

७. श्रीमती मुकेश कुमारी कतना : इनके पति का नाम भी विपन कुमार कतना है। यह हमीरपुर शहर का अति प्रतिष्ठित परिवार है। धार्मिक व सामाजिक कार्यों में सहयोग करते रहते हैं। विशुद्ध धार्मिक विचारधारा है। प्रतिदिन दैनिक यज्ञ करते हैं। यज्ञशाला का निर्माण भी किया है। आर्य समाज हमीरपुर को निरन्तर सहयोग देते रहते हैं।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग खरीहड़ी में श्री कृष्ण जयन्ती

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग खरीहड़ी में योगीराज श्री कृष्ण की जयन्ती धूमधाम, हर्षोल्लास से मनाई गई। बैठक की अध्यक्षता स्वामी रामदेव के शिष्य मायाराम ने की। कार्यक्रम के प्रारम्भ में हवन यज्ञ के उपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र. के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य योगीराज श्री कृष्ण के जीवन की विविध घटनाओं पर प्रकाश डाला। उन्हें विश्व के महान् पुरूष की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण का जीवन मानव मात्र के लिए प्रेरणामयी, आदर्शमयी चरित्र था। इस अवसर पर आर्य जगत् की सुप्रसिद्ध महिला श्रीमती लीला नरूला ने सुन्दर भजन द्वारा श्री कृष्ण के जीवन की झांकी प्रस्तुत की। इस अवसर पर श्रीमती रमा शर्मा, सरला गौड़, अर्चना आर्य ने अपने भजनों व विचारों की अमृत वर्षा की। तदोपरान्त श्री कृष्ण के जीवन की घटनाओं पर विद्यार्थियों की भाषण प्रतियोगिता हुई। इसमें ११ विद्यार्थियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम की समाप्ति के उपरान्त इस आर्य समाज का वार्षिक चुनाव श्री मायाराम की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से श्रीमती अर्चना आर्य को प्रधान, श्रीमती पूजा को सचिव तथा श्री माया राम जी को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इन तीनों को शेष कमेटी मनोनीत करने के लिए अधिकृत किया गया। बाद में सभी विद्यार्थियों को आर्य समाज की ओर से ईनाम वितरित किए गए। बाद में ऋषि लंगर का आयोजन हुआ।

–पूजा, सचिव आर्य समाज

आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र. के पदाधिकारियों द्वारा जिला कांगड़ा की आर्य समाजों का दौरा

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश की जनवरी माह में जोगिन्द्र नगर में हुई बैठक में लिये गये निर्णय के अनुसार प्रदेश की सभी आर्य समाजों की सम्पत्ति की सुरक्षा प्रचार कार्य को गति एवं सभी लोगों को सक्रिय रूप से कार्य करने के उद्देश्य से सभा द्वारा दौरा किया जाना स्वीकृत किया गया था। इसी क्रम में जिला कांगड़ा की आर्य समाजों के दौरे के कार्यक्रम को लेते हुए निम्नलिखित पदाधिकारियों द्वारा दिनांक २७ जुलाई २०१४ से २८ जुलाई २०१४ तक ८ आर्य समाजों की यात्रा की गई :

सर्वश्री १. प्रबोध चन्द्र सूद (प्रधान)
२. सत्यपाल भटनागर (उप–प्रधान)
३. ओम मरवाहा (उप–प्रधान)
४. रामफल सिंह आर्य (महामन्त्री)
५. श्रीमती सुमन सूद (कार्यकारिणी सदस्य)

इस यात्रा में निम्नलिखित आर्य समाजों की सम्पति आदि का विवरण एवं उन्हें सक्रिय बनाने हेतु प्रेरणा तथा सभा से पूर्ण ताल मेल हेतु कार्य किया गया।

आर्य समाज :–नूरपुर, कोतवाली बाजार धर्मशाला, सिविल लाईन धर्मशाला, कांगड़ा, नगरोटा बगवां, भवारना, पालमपुर एवं पपरोला।

सभी आर्य समाजों से जहाँ पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ, वहीं उन्होंने कार्य को आगे बढ़ाने हेतु दृढ़ सकंल्प लिया तथा अपने–अपने क्षेत्र में प्रचार कार्य को पूर्व उत्साह से करने की बात कही।

उल्लेखनीय है कि कांगड़ा जिले की ये सभी आर्य समाज पर्याप्त पुरानी हैं तथा उस समय स्थापित की गई भी जब कांगड़ा में विनाशकारी भूकम्प १९०५ में आया था और आर्य समाज ने सराहनीय सेवा कार्य किया था। उस सेवा कार्य से प्रभावित होकर लोगों ने स्थान–स्थान पर आर्य समाजें स्थापित की थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हि. प्र. उस कार्य के लिये कटिबद्ध हैं कि पूरे प्रदेश में एक बार संगठन के कार्य को सुदृढ़ किया जाये तथा सभी समाजों को सुचारू रूप से कार्य चलाने हेतु मार्गदर्शन देकर उन्हें क्रियाशील बनाया जाये। यह प्रथम चरण का दौरा था। धीरे–धीरे सभी स्थानों पर जाकर समाजों को क्रियशील बनाने के लक्ष्य को शीघ्र ही पूर्ण किया जायेगा।

इस यात्रा के दौरान जिन लोगों का श्रेष्ठ योगदान एवं सहयोग प्राप्त हुआ सभा उन सभी का धन्यवाद करती है।

–रामफल सिंह आर्य, महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा (हि. प्र.)

श्रीमती ईश्वरी देवी की संक्षिप्त जीवनी

श्रीमती ईश्वरी देवी पत्नी स्वर्गीय श्री मथरा दास नन्दा का जन्म २३ दिसम्बर १९२८ को हुआ था। आपकी माता का नाम श्रीमती शकुन्तला देवी व पिता का नाम श्री निक्कू राम था। अभी आप की आयु मात्र दो साल की थी कि आपके सिर से पिता का साया उठ गया। पांचवी तक पढ़ाई करने के बाद आपने कपड़े सिलाई का कार्य सीखा। आपकी शादी श्री मथरा दास नन्दा से छोटी आयु में हो गई। वहां पर जाकर भी आपने सिलाई का कार्य जारी रखा व इलाके की २००० से अधिक लड़कियों को सिलाई का कार्य सिखाया व परिवार के पालन पोषण में अपना भरपूर सहयोग दिया। चूंकि आपके पति पक्के आर्य समाजी थे तो आपने भी उनकी विचार धारा को अपना लिया। प्रति वर्ष घर में आर्य समाज के प्रचार के लिए कार्यक्रम होता था तथा बाहर से विद्वान्, संन्यासीगण आते थे। एक समय ऐसा आया कि घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी उधर प्रचार के लिए विद्वान् आ गये। एक दिन का खाना ही उपलब्ध था। दूसरे दिन आपके पति निराश हो गये तो आपने कहा कि घबराओं मत। मेरे कुछ गहने सुनियार को बेच दो। विद्वानों की सेवा करना हमारा धर्म है। न जाने भगवान हमारी परीक्षा ले रहे हों। इस तरह आर्य समाज का कार्य सम्पन्न कराया। संयोग से इसके बाद आर्थिक स्थिति में भी सुधार आ गया। पिछले २० वर्षों से आप घर में दैनिक यज्ञ कर रहे थे। जन्मपत्री, जादू–टोने में आपका बिल्कुल विश्वास नहीं था। आप धनेटा महिला सहकारी समिति के ५० वर्ष तक सचिव रहीं। धनेटा महिला मण्डल के २० वर्ष तक प्रधान व स्थानीय स्कूल के पी. टी. ए. के प्रधान भी रहीं। आप हंसमुख, मुदुभाषी स्वभाव की थीं तथा सामाजिक कार्यों व गरीबों की मदद में अग्रसर रहती थीं।

८६ वें वर्ष में ३१ मार्च २०१४ कों आप ने एक हफ्ता बीमार रहने के बाद दयानन्द मैडिकल कालेज लुधियाना में अपना शरीर त्याग दिया। आपके तीन पुत्र व पांच बेटियाँ थी इसके इलावा एक भतीजा श्री भगत राम नन्दा जिसके माता–पिता पैदा होते ही मर गये थे को अपने प्रथम लड़के के रूप में अपनाया तथा उसका पालन–पोषण किया। भगवान पर आपकी अटूट श्रद्धा थी। अपने दूर के रिश्तेदारों के भी समग्र विकास को प्रयासरत रहती थीं यही कारण था कि आप को सभी माता जी कर के बुलाते थे। आपका जीवन सचमुच में महान् तथा प्रेरणात्मक था। आप जमाने पर कटाक्ष करती थीं कि एक माँ १० बच्चों का पालन कर सकती है लेकिन १० बच्चे मिलकर एक माँ–बाप का पालन नहीं कर पाते।

'स्वामी श्रद्धानन्द' (संक्षिप्त जीवन वृत)

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयाईयों तथा अनन्य भक्तों में स्वामी श्रद्धानन्द का नाम भी आता है। उन्होंने जीवन पर्यन्त महर्षि के सपनों को साकार करने का प्रयास किया। उनका संन्यास से पूर्व नाम मुंशीराम था। उनका जन्म १८५६ ई. में जालन्धर (पंजाब) के तलवन ग्राम में हुआ। वह बालक के रूप में विश्वानाथ मन्दिर (बनारस) में जाया करते थे। बनारस में वह शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। एक दिन उन्हें मन्दिर में जाने से इसलिये रोक दिया गया क्योंकि उस समय रीवा राज्य की रानी पूजा कर रही थी। उन्हें इस बात से ठेस लगी कि भगवान के दरबार में भी व्यक्ति–व्यक्ति में भेद–भाव होता है। इसके पश्चात मन्दिर के पाण्डे के चारित्रिक पतन की एक घटना देख वह इतने विचिलित हुये कि उन्होंने हिन्दु धर्म त्यागने की सोची। वह चर्च जाने लगे। परन्तु वहां भी पादरी और नन को आपत्तिजनक अवस्था में देखकर यह इरादा भी त्याग दिया। उनका मन्दिर और गिरजाघर से विश्वास उठ गया।

मुन्शी राम व्यवसाय से वकील थे। उनकी संगत तथा मित्रता पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित लोगों से थी। जैसी संगत वैसी रंगत। वह भी विलासी जीवन बिताने लगे। उनके पिता बरेली के कोतवाल थे। स्वामी दयानन्द बरेली आये। कोतवाल के नाते उन्होंने भी महर्षि का प्रवचन सुना। वह बहुत प्रभावित हुये। उन्होंने चाहा कि उनका पुत्र भी महर्षि के प्रवचनों को सुनें जिससे उसका भी सुधार हो। परन्तु पुत्र का विचार पिता से भिन्न था कि यह केवल संस्कृत ज्ञाता साधु क्या शिक्षा देगा ?. पिता का मान रखने के लिये फिर भी वह व्याख्यान सुनने गये और उन्हीं के हो कर रह गये। वह महर्षि के तेजमय मुख मण्डल, ओजस्वी वाणी और पांडित्य पूर्ण प्रवचन सुनकर बहुत प्रभावित हुये। उनका शंका समाधान भी हुआ। उनकी वैदिक धर्म में आस्था लौट आई। उनकी लाहौर में आर्य समाज के नेता लाला साईदास से भेंट हुई। उन्होंने मुन्शी राम जी को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को दिया। जिसके पढ़ने से उनकी काया ही पलट गई। अब उन्होंने विधिवत आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण की और उसके अनुकूल अपने में सुधार लाया।

उनकी बड़ी बेटी मिशनरी स्कूल में पढ़ती थी। एक दिन उन्होंने उसे यह गीत गाते हुए सुना, "ईसा, ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल" तथा "ईसा मेरा राम रमैया ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।" वह यह सुनकर चिन्तित हो उठे। यदि बच्चों को ऐसी शिक्षा मिलती रहेगी तो धर्म और संस्कृति का बचाव कैसे होगा। भारतीय बच्चों को अपनी संस्कृति निहित शिक्षा मिलनी चाहिये। सबसे पहले उन्होंने आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना जालन्धर में की जो आज एक महाविद्यालय का स्वरूप लिये हुये है। इसके पश्चात उन्होंने १९०२ में हरिद्वार के सामने गंगा के पूर्वी तट पर कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की। डी. ए. वी. द्वारा प्रयास उन्हें सन्तुष्ट न कर सके। उन्होंने गुरुकुल स्थापना के लिये ₹ ४०,००० की राशी इकटठी की। भूमि एक धर्म परायण त्यागी व्यक्ति मुन्शी अमन सिंह ने अपनी १४०० बीघा कांगड़ी ग्राम में दी जहां झाड़ियों का जंगल था। उन्होंने इन झाड़ियों को साफ करवा कर सर्व प्रथम आवासिय झौपड़ियाँ बनबाई और महर्षि के विचारों के अनुरूप गुरूकुल आरम्भ किया। प्रवेश पाने वाले पहले ३० विद्यार्थियों में उनके अपने दो बेटे भी थे। उन्होंने पूर्ण रूप से अपने को गुरूकुल के लिये समर्पित कर दिया। अपनी जालन्धर की कोठी और प्रैस गुरूकुल के कार्यों के लिये दान में दे दिये। यहाँ सफलता मिलने पर उन्होंने मुलतान (पाकिस्तान) रोहतक, रायकोट (लुधियाना) तथा सूपा में गुरुकुल स्थापित किये। कन्याओं के लिये भी एक गुरुकुल देहरादून (उतरांचल) में स्थापित किया। आर्य समाज को सुदृढ़ करने तथा प्रचार–प्रसार के लिये पंजाब प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशि आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना उनके प्रयासों से हो सकी। सन् १९१७ में उन्होंने संन्यास लिया और पूर्ण कालिक आर्य समाज सेवक बन गये। संन्यासी के पश्चात उन्होंने श्रद्धानन्द नाम अपनाया। स्वामी जी हिन्दु–मुस्लिम एकता के पक्षधर थे उन्होंने इसी विषय पर फतेहपुरी तथा जामा मस्जिद में भाषण दिये। यह एकता स्वाधीनता प्राप्ति के लिये आवश्यक थी। परन्तु इसके साथ हिन्दु संगठन का दृढ़ करने के लिए हिन्दु सभा तथा शुद्धि सभा की भी स्थापना की। बड़ी संख्या में ऐसे हिन्दुओं ने इस्लाम में प्रवेश किया हुआ था। जिन्होंने राजपूत लिखना नहीं छोड़ा था। उन्हें पुनः वैदिक धर्म में प्रवेश दिलाया। शुद्धि कार्य से कट्टर मुस्लमान उनके शत्रु बन गये। इसी कड़ी में १९२६ ई. में उन्होंने एक मुस्लिम महिला असगरी बेगम की शुद्धि कर हिन्दु धर्म में शांति नाम से प्रवेश दिलाया। परन्तु एक धर्मान्ध अब्दुल रशीद नामक व्यक्ति ने उन्हें २३ दिसम्बर १९२६ को गोली मार कर उनके जीवन लीला समाप्त कर दी।

जलियांवाले बाग गोली काण्ड के पश्चात लाहौर में हो रहे कांग्रेस अधिवेशन के वह स्वागत समिति के अध्यक्ष बने। अधिवेशन से पूर्व एक भव्य जलूस निकाला गया जिसका

नेतृत्व भी स्वामी जी कर रहे थे। जलूस जब घण्टा घर की ओर बढ़ रहा था कि आगे जाने का रास्ता गोरे सैनिकों ने संगीनें तान कर रोक रखा था। इससे पहले कि लोग डर कर तितर–वितर हो जाते यह निर्भीक संन्यासी आगे बढ़ा और छाती तान कर गोरे सैनिकों को गोली मारने के लिये ललकारा। सभी इस साहस को देख कर स्तब्ध रह गये। संगीनें नीची हो गईं। और जलूस बेरोक टोक अपने गन्तव्य तक पहुँचा। स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के महान् नेता थे। आज भी आर्य समाज को उन जैसे नेतृत्व की आवश्यकता है ताकि ऋषि कार्य को गति मिले।

'गुरू' गुण की खान (अध्यापक दिवस पर)

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

गुरू हमारे जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान रखता है, आइए इस बात को जानने का प्रयत्न करें–बालक की पहली युनिवर्सिटी है 'माँ'। माँ उसे जो कुछ सिखाती है वह वही सीखता चला जाता है। दूसरी युनिवर्सिटी है–मित्र, सहेलियाँ। जैसे उनके विचार होंगे वैसे ही उनकी संगत में रहने वाले के विचार हो जाऐंगे। तीसरी युनिवर्सिटी है स्कूल, कॉलेज जहाँ हमारे गुरू होते हैं। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, खेल, संगीत, नृत्य अथवा अन्य कोई भी क्षेत्र। सभी क्षेत्रों में गुरू को सर्वोपरि माना जाता है। 'गुरू' शब्द बहुत व्यापक है। गुरू का अर्थ है–बड़ा, भारी या जो हम से अधिक ज्ञान का स्वामी हो दूसरे अर्थों में गुरू वह जो हमें गुर या गुण सिखाता है। महान् कवि और चिंतक कबीर जी ने गुरू को कुम्हार और शिष्य को घड़े की संज्ञा दी है:–

गुरू कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ गढ़ काढ़े खोट।
अन्तर हाथ सहार दे, बाहर मारे चोट।

जिस तरह कुंभकार अनगढ़ मिट्टी को तराश कर सुन्दर घड़े का रूप देने के लिए थपकी से बाहर चोट करता है, किन्तु अन्दर से हाथ का सहारा भी बनाये रखता है ठीक वैसे ही गुरू या अध्यापक शिष्य को झाड़ लगाता है या कभी–कभी शारीरिक दण्ड भी देता है तो उस समय उस के मन में यह भावना रहती है कि मेरा शिष्य आत्म निर्भर बन कर एक सभ्य नागरिक बने और समाज में उचित स्थान प्राप्त करे। कबीर जी अपने गुरू रामानंद के कारण ही 'कबीर' बन पाए। हम चाहे किसी भी क्षेत्र से जुड़े हों, गुरू के मार्गदर्शन के बिना आगे बढ़ ही नहीं सकते। समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने नेत्रहीन गुरू विरजानंद के कारण ही अपने को पहचानने में सफल हुए। समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वासों, पाखंड और आडम्बरों का प्रमाण सहित खण्डन कर के क्रांतिकारी परिवर्तन किया। राम कृष्ण परमहंस जैसे गुरू ही थे जिन्होंने विवेकानन्द जैसा शिष्य तैयार किया। इसी तरह महान् स्वतन्त्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले यदि न होते तो महात्मा गान्धी शायद ही आज पूरे विश्व के आदर्श पथ प्रदर्शक बन पाते। दूसरी ओर भारत के द्वितीय राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधा कृष्णन ऐसे ही महान् गुरू रहे, जिनकी जयन्ती पांच सितम्बर को हर वर्ष हम 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाते हैं। डॉ. राधाकृष्णन उच्चकोटि के दार्शनिक, महान् विचारक, अनेक भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के ज्ञाता थे। वे अपने जीवन काल में शिक्षक के रूप में अपनी सेवायें देते रहे। अध्यापक जिसे 'राष्ट्र निर्माता' की संज्ञा दी गई है, को सम्मान देने की प्रथा है। प्रत्येक राज्य में 'स्टेट अवार्ड' और राष्ट्रीय स्तर पर 'नेशनल अवार्ड' से अध्यापकों को सम्मानित किया जाता है। इस दिन विशेष रूप से सरकारी तथा गैर सरकारी स्कूलों में मनोरंजन के कार्यक्रम होते हैं।

अध्यापक–कल्याण के लिए योजनाएं बनाई जाती हैं। अनेक राज्यों में कॉलेज–स्तर पर भी इसे मनाया जाता है। सारा राष्ट्र इस दिन अध्यापक तथा उस के अमूल्य योगदान को सादर स्मरण करता है।

ध्यान क्यों नहीं लगता ?

♦देवराज आर्य मित्र, नई दिल्ली–६४

कुछ सज्जनों का कहना है कि सन्ध्या (ईश्वर भक्ति) करते समय ध्यान नहीं लगता। ध्यान क्यों नहीं लगता इसका कारण है कि धारणा दृढ़ नहीं है। ध्यान लगाने से पहले धारणा बनानी पड़ती है। यदि धारणा पक्की नहीं है तब ध्यान कभी नहीं लगेगा। ध्यान लगाने के लिए धारणा को अटूट बना।

धारणा बनती है मन के द्वारा और मन है चंचल। फिर पहले मन को वश में करो। मन बुद्धि के अधीन है। यदि बुद्धि में ही मलिनता भरी हुई है तब मन मनमानी करने में स्वतंत्र हो जाता है। इन्द्रियों के बहकावे में आकर संयम खो देता है। धारणा धरी रह जाती है। फिर ध्यान लगाने का प्रश्न ही नहीं होता।

प्रिय बंधुओ! पहले बुद्धि को निर्मल करो! बुद्धि की निर्मलता के लिए शुद्ध सात्विक आहार ग्रहण करो! तामसिक भोजन से बचो जो बुद्धि भ्रष्ट करता है। विद्वानों का सत्संग करो! आर्य पुस्तकों का स्वाध्याय करो। मन को वश में करने के लिए प्राणायाम द्वारा अभ्यास करो। मन में धारणा बनाओ कि ईश्वर उपासना करनी आवश्यक है। धारणा जमते ही ध्यान लगाना संभव हो जाएगा। जैसे प्यासे व्यक्ति की धारणा पानी प्राप्त करने की ओर ध्यान लगा देती है ऐसे ही ईश्वर भक्ति बनाने से ध्यान लग जाता है।

संघ समाचार

•हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ जिला मण्डी की कार्यकारिणी की एक अति आवश्यक बैठक दिनांक २० सितम्बर २०१४ को प्रातः ११ बजे आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी सुन्दरनगर में होनी निश्चित हुई है। जिसमें प्रदेश के मुख्य संरक्षक बी. ड़ी शर्मा, प्रदेशाध्यक्ष रमेश भारद्वाज, महामन्त्री भारती तथा अन्य नेता अपने विचारों से अगवत करायेंगे। इस बैठक में मुख्य रूप से सरकार से पंजाब आधार पर हिमाचल के समस्त पैंशनरों को वेतन व भत्ते देने का अनुरोध किया गया है। जिसमें ५०० रूपये प्रतिमास चिकित्सा भत्ता, करूणामूलक आधार पर पैंशनर परिवार के बच्चों को नियुक्त करना तथा २००३ के उपरांत सेवानिवृत होने वाले सभी पैंशनरों को पहले की तरह सेवा लाभ देना शामिल है। इस बैठक में संगठन को मजबूत करने हेतु सभी खंडों के प्रधानों से विचार आमन्त्रित किये जायेंगे। हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. अमर नाथ शर्मा, जिला मण्डी के प्रधान कृष्ण चन्द आर्य तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष लालमन शर्मा भी संगठन को मजबूत बनाने हेतु अपने विचारों को रखेंगे। इस बैठक में सभी खंडों के प्रधानों एवं समाज सेवियों को भी सम्मानित किया जाएगा। सरकार द्वारा १० प्रतिशत भत्ता दिये जाने को स्वागत किया गया है, वहां पैंशनर कल्याण संघ हिमाचल प्रदेश मुख्यमन्त्री से अनुरोध करता है कि इस भत्ते को मूल पैंशन में शामिल करके प्रदेश के पैंशनरों को कृतार्थ करें।

जिला मण्डी के समस्त खंडों के प्रतिनिधियों द्वारा सरकार से यह भी अनुरोध किया गया कि अल्मारियों में बंद पड़े पैंशनरों के लाखों रूपयों के चिकित्सा बिलों का अबिलम्ब भुगतान किया जाए और पैंशनरों को समुचित चिकित्सा बजट अलाट किया जाए। बैठक के उपरांत सभी पैंशनरों के सम्मान में प्रीति भोज का आयोजन भी किया जाएगा।

•हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ जिला मण्डी के चच्योट खण्ड की मासिक बैठक दिनांक ६ अगस्त २०१४ प्रातः ११ पंचायत भवन में सम्पन हुई। इस बैठक में ६६ सदस्य उपस्थित थे। बैठक में सर्वप्रथम इस खण्ड में दिवंगत हुए पैंशनरों के शान्ति और सदगति की प्रार्थना की और दो मिनट का मौन रखा गया। बैठक खण्ड प्रधान रणजीत सिंह के अध्यक्षता में हुई। जिसमें जिला के अध्यक्ष कृष्ण चन्द आर्य, बल्ह खण्ड के प्रधान मंगत राम चौधरी तथा सुन्दरनगर से दयालु राम शास्त्री जी उपस्थित थे। इस बैठक में सभी वक्ताओं ने सरकार से पांच, दस और पन्द्रह प्रतिशत बढ़ौतरी को मूल पैंशन में शीघ्र शामिल करने का अनुरोध किया। श्री बृज लाल प्रैस सचिव ने सरकार द्वारा अविलम्ब ५०० रू. चिकित्सा भत्ता देने का अनुरोध किया। वरिष्ठ उप–प्रधान श्री खेम चन्द ठाकुर ने पंजाब पद्धति पर हिमाचल के पैंशनरों को पैंशन देने का अनुरोध किया। इस अवसर पर प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य श्री जय राम ठाकुर जी, श्री चन्द्रमणी आदि ने अपने ओजस्वी विचारों की वर्षा की। बैठक के उपरान्त प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर नाथ शर्मा के भतीजे और उनकी पत्नी द्वारा बुजुर्ग पैंशनरों के समान में सुस्वादु भोजन का आयोजन किया गया तथा आगमी बैठक ८ सितम्बर प्रातः ११ चैलचौक में आयोजित करने का निर्णय लिया।

•२६ अगस्त को हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ बल्ह खण्ड की बैठक खण्ड प्रधान श्री मंगत राम चौधरी की अध्यक्षता में पंचायत घर डडौर में सम्पन्न हुई। महासचिव श्री जय राम नायक जी ने मंच संचालन किया। इस बैठक में प्रदेश संरक्षक एवं जिला मण्डी के प्रधान श्री के. सी. आर्य, महासचिव श्री भगत राम आजाद तथा सुन्दरनगर के सचिव विनोद स्वरूप ने भी भाग लिया। वक्ताओं ने पैंशनर्ज़ की लम्बित मांगों पर विस्तार से चर्चा की। १० प्रतिशत महंगाई भत्ते कि बकाया राशि को एक मुश्त प्रदान करने का सरकार से अनुरोध किया। एकीकरण के पक्ष और विपक्ष में भी वक्ताओं ने विचार प्रकट किये। श्री के. सी. आर्य ने सभी पैंशनरों से अनुरोध किया कि २० सितम्बर को जिला की बैठक जो आर्य समाज खरीहड़ी (सुन्दरनगर) में होने जा रही है अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर प्रदेश प्रधान रमेश भारद्वाज के विचार सुनें और आगामी रणनीति पर चर्चा करें। इस अवसर पर माया राम शर्मा जी ने सुस्वादू खीर सभी को परोसी तथा श्री लुदर शर्मा जी ने मीठे–मीठे रस भरे आम सभी को खिला कर खूब वाह वाही लूटी।

इस बैठक में श्री गोबिन्द राम, खेम चन्द ठाकुर, ललित कुमार, गुरदास, चेतराम, कर्मदास, अनन्त राम सैनी तथा अन्य पैंशनर भी उपस्थित थे। –सम्पादक

शोक समाचार

पंडित केदार नाथ शर्मा का ६१ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे जीवन पर्यन्त आर्य समाज की विचारधारा से जुड़े रहे। उन्होंने बहुत सी धार्मिक संस्थाओं में जीवन भर कमाई हुई राशि दान दी। वे एक उच्च विचारधारा के व्यक्ति रहे, जिन्होंने ज़ीवन पर्यन्त सच्चाई, ईमानदारी, नेकी और सज्जनता का साथ दिया। उनके दिवंगत होने से समाज में ऐसी कमी आई जिसे निकट भविष्य में पूरा कर पाना असम्भव है। उनका अन्तिम संस्कार सुन्दरनगर शमशान घाट में पौराणिक रीति से सम्पन्न हुआ। वे आर्य जगत् के महान् संन्यासी स्वर्गीय स्वामी विद्या नन्द सरस्वती के प्रिय शिष्य थे। आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी और आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग खरीहड़ी तथा आर्य वन्दना परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजली दी गई और उनकी आत्मा की शान्ति और सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

–मुख्य प्रबन्धक सम्पादक

आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी के तत्त्वावधान में गांव हरवाणी में श्रावणी पर्व आयोजन के चित्र

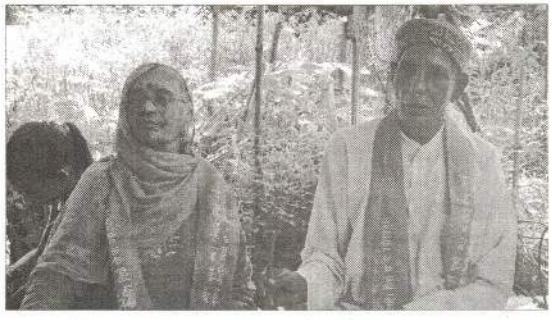
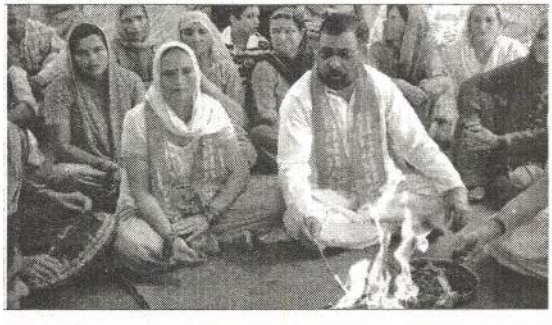

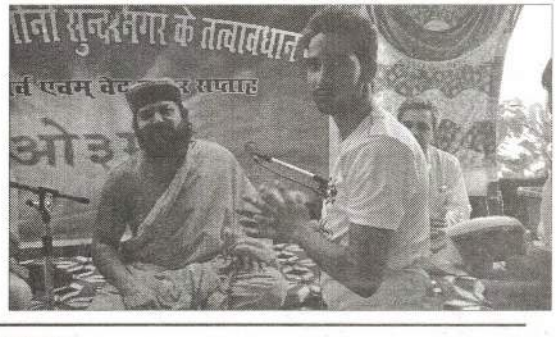

साभार

श्रीमती लीला नरूला, हरिपुर, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी ने ₹ ५००, श्री परमानन्द शास्त्री, करसोग, जिला मण्डी ने ₹ ३०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को-आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

स्वर्गीय श्रीमती ईश्वरी देवी एवम् श्री मथरा दास नन्दा का परिवार

मथरा दास नन्दा

ईश्वरी देवी नन्दा

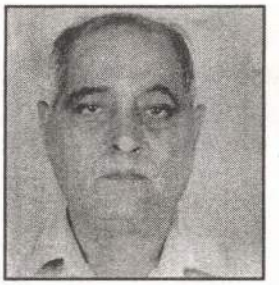
सत प्रकाश नन्दा

मृदुला

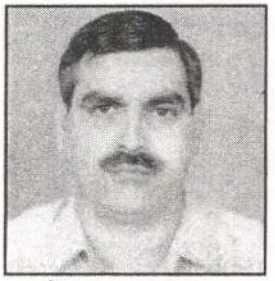
योग प्रकाश नन्दा

वृन्दा

चन्द्र प्रकाश नन्दा

निशा

ओम मरवाह

देवेन्द्रा

रविन्द्र सरीन

सुमन

सुशील पुरी

उमा पुरी

विपन कतना

मुकेश